फरीदाबाद

मजदूर समाचार

अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 362 — अगस्त 2018

तूफान का समय, नया वर्णन चाहिये

मेरे व्हाट्सएप में एक सिलसिला बन रहा है।

कैसा सिलसिला?

दोस्त लोग खुद का लिखा तो भेजते ही हैं और फारवर्ड भी करते रहते हैं। बहुत तरह के, कई तरीकों के विवेक, बोध, बुद्धि, भावना, चेतना, शऊर मेरे जीवन में लाते हैं।

और फिर तू फारवर्ड करता है!

नहीं, सारे फारवर्ड नहीं करता। कुछ को पचाता हूँ, कुछ को आगे सोचना है करके रख लेता हूँ, कुछ को बहुत करीबी को भेजता हूँ। और कुछ को ग्रुपों में भेजता हूँ।

तो मेरा भी कुछ फारवर्ड किया हुआ मैसेज सुन। जबकि मुझे ज्यादा Good Morning और फूल-पत्ते ही आते हैं।

हा-हा! शायद तुम्हें भगवान समझते हैं और जगाने के लिये पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।

जो भी कहो दोस्त, ऐसा प्रभु बनना तो बहुत-ही बोरिंग हो गया है। पर अब एक सिम्पल मैसेज सुनाता हूँ। बहुत रोचक है: "जीवन का टाइम। काम का टाइम। नौकरी का टाइम। पृथ्वी का टाइम। उत्पादन का टाइम। परिवार का टाइम। यह सारे टाइम बेमेल नहीं हैं। अमेल हैं।"

अमेल? संजय, यह क्या हो रहा है?

कोई नहीं, कोई नहीं। इन्हें बोलने दो। माहौल बना है।

"आलोचना का समय नहीं है। नये वर्णन का समय है।" यह एक फारवर्ड आया था कुछ दिन पहले मेरे पास। अब समझ आ रहा है उसका महत्व।

एकदम ठीक। मुझे लग रहा था कि जनाब एक ताजा वर्णन के मोड़ पर थे इसलिये टोकने से मना किया।

चलो फिर आगे बढो।

मैं जब अपने साथ होता हूँ तब परिवार के समय के भंवर में घूम जाता हूँ। क्या हुआ है? क्या होने वाला है? क्या हो सकता है? क्या छोड़ कर आया हूँ? क्या है जिससे मिलूँगा? इसी तरह के सवाल, तरह-तरह की छवियाँ उत्पन्न होती रहती हैं।

तो यह घूमना रुकता कैसे है? टूटता कैसे है?

जब दूसरा कोई मिलता है। एकदम टॉपिक बदल जाता है। अलग चीजों की बातें शुरू हो जाती हैं और दुनिया आ जाती है। फटाक से, तेजी से परिवार का समय दुनिया के समय के साथ काँपने लगता है।

काँपने का मतलब? डर से क्या? या कुछ और?

नहीं-नहीं। सुबह की जो शीतलता होती है। एक धड़कन कह दो। एक फड़कना कह दो। जब कोई दो प्रवाह निकट आते हैं, टकराते हैं, एक-दूसरे में पिघल जाते हैं। कोई एक अलग रूप उभरता है। वो न परिवार रहता है, न दुनिया रहती है।

मैं बताती हूँ। आप थोड़ा धैर्य रखो। एक मैसेज आया, "हमारे पैसे से, हमारी मेहनत से सब कुछ चलता है। और हमारे ऊपर शासन करने वालों को यह पता है।" मैंने वापस लिखा कि यह सब जानते हैं लेकिन यह एक सार्वजनिक रहस्य बन कर रहता है।

यह तो खूब बोली आप।

अरे आगे तो सुनो। उनका जवाब सुनो, "सार्वजनिक रहस्य था। अब नहीं है। अब कोई नहीं मानता कि सत्ता माईबाप है। कोई नहीं मानता कि उनके लिये कोई कुछ करेगा।"

इसी से एक मैसेज याद आया। मुझे ढूँढने दे। हाँ, मिल गया: "कोई मेहनत से खाया। कोई माँग के खाया। कोई लूट कर खाया। लूट कर खाने वाले भाषण देना जानते हैं। मेहनत वाले चुप रहना सीखे हैं। माँगने वाले नजर मिलाना जानते हैं।"

सब अपने को ईमानदार बोलते हैं। इनको लाइसैन्स मिला हुआ है लूटने का। इनको मजदूर की परिभाषा ही नहीं मालूम। फुटबाल बना रखा है। ना हम माँगने वाले हैं। ना हम मेहनत वाले हैं। हम तो बने हैं मेहनत को खत्म करने के लिये। माँगने से मेहनत खत्म नहीं होगी।

यह सज्जन तूफान लिये आये और चले गये। लेकिन सोचने के लिये बहुत-कुछ छोड़ गये।

एक तूफान का टाइम था उनमें।

हाँ, यह तूफान का टाइम बाँधा नहीं जा सकता। वह अदृश्य रहता है। लेकिन जब प्रकट होता है तब बनी-बनाई धाराओं को तितर-बितर कर देता है।

यह तूफान का समय अन्त:शीरा के समय से जुड़ा हुआ है। हम भूमिगत की शक्ति का आंकलन लगाते हैं इस तूफान के वेग और बल से।

यह बातचीत सुन कर मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे आसपास तो हरेक में इस तरह का एक तूफानी आवेग है। यह आता-जाता रहता है। लेकिन इसकी अवधि में अन्तराल कम होते जा रहे हैं।

आपका कहना है कि भूमिगत में उबाल है?

निश्चित तौर पर तो मैं कह नहीं पाऊँगा। लेकिन सारे लक्षण इसका आभास दे रहे हैं। आपसे सहमत हूँ कि नया वर्णन तो चाहिये।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों की देनदारी की जिम्मेदारी मुख्य नियोक्ता की होती है, फैक्ट्री जहाँ वरकर ने काम किया वहाँ की मैनेजमेन्ट की होती है

कम्पनियों द्वारा ठेकेदार कम्पनियों के जरिये वरकर रखना आज व्यापक है। और, कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार जो मजदूरों के बनते हैं वह भी ठेकेदार कम्पनियाँ बड़े पैमाने पर नहीं देती। पी एफ और ओवर टाइम में तो बहुत गड़बड़ी की जाती है। और फिर, ठेका खत्म करने पर अथवा ठेकेदार कम्पनी के भाग जाने पर मजदूरों की बड़ी राशि फँसती है। कम्पनी कहती है, मैनेजमेन्ट कहती है कि हम कुछ नहीं करेंगे क्योंकि तुम ठेकेदार कम्पनी के मजदूर हो, ठेकेदार कम्पनी को पकड़ो, हम कुछ नहीं जानते। जबकि, कम्पनियों के अपने कानूनों के मुताबिक ठेकेदार कम्पनी के वरकरों के जो बनते हैं उनका भुगतान सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी मुख्य नियोक्ता के नाते उस कम्पनी की है जहाँ मजदूर काम करते हैं, जहाँ वरकरों ने ड्युटी की थी। ठेकेदार कम्पनी इस-उस कारण से मजदूरों को देय का भुगतान नहीं करती है तो यह उस कम्पनी की जिम्मेदारी है जहाँ वरकर कार्यरत रहे हैं कि वह स्वयं उन मजदूरों का भुगतान करे। इसलिये कुछ फँस जाये तो ठेकेदार कम्पनी को ढूँढने, ठेकेदार कम्पनी के पीछे भाग कर परेशान होने की बजाय उस मैनेजमेन्ट को पकड़ना और उस पर दबाव डालना बनता है जहाँ मजदूर ने उत्पादन किया है अथवा गार्ड की ड्युटी की है।

✶**उद्योग विहार, गुड़गाँव में गार्ड :** जून में फैक्ट्री से सेक्युरिटी कम्पनी का ठेका छूट गया। अप्रैल और मई की तनखायें गार्डों को नहीं दी हैं। ठेकेदार कम्पनी का कार्यालय नोएडा में है।

✶**ओरियन्ट फैशन** (488-89 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री से 6 वर्ष पहले **रॉयल फैशन** नाम की ठेकेदार कम्पनी भाग गई। फैक्ट्री में रॉयल फैशन के जरिये जिन 28 वरकरों को रखा था उनका 3 वर्ष का पी एफ जमा नहीं है।

✶**होण्डा** (1 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में लाइन से बाइक तथा स्कूटर उतार कर लोडिंग एरिया में ले जाने के लिये **एस एस सर्विसेज** ठेकेदार कम्पनी के जरिये 120 वरकर होण्डा कम्पनी ने रखे हैं। इन 120 मजदूरों की महीने में एक-आधा ड्युटी खा जाते हैं।

✶**ई आर ऑटोमोटिव** (183-183ए सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में इस वर्ष मार्च में ड्युटी पर गार्ड की तबीयत खराब हो गई। मृत्यु। गार्ड के परिवार को न तो ई एस आई से कोई राशि मिली और न ही पी एफ से पेन्शन बनी क्योंकि गार्ड की ई एस आई तथा पी एफ नहीं थी। ई आर ऑटोमोटिव फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। और, ई आर मैनेजमेन्ट ने महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों के लिये 6 गार्ड एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं।

ऊपर जिनका जिक्र है उन सब में मुख्य नियोक्ता जिम्मेदार हैं।

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा मार्च 2017 में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन खारिज

केन्द्र सरकार केन्द्रिय कार्यालयों द्वारा रखे जाते वरकरों के लिये न्यूनतम वेतन निर्धारित करती है और यह आमतौर पर टेम्परेरी वरकरों के लिये होता है। प्रान्त में कार्यरत स्थाई तथा अस्थाई मजदूरों के लिये न्यूनतम वेतन राज्य सरकार निर्धारित करती है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन का अर्थ मात्र यह है कि इससे कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे कानून के राज के आज के दौर में कानूनों का उल्लंघन सामान्य है और कानूनों का पालन अपवाद है।

आज उत्पादकता इतने ऊँचे स्तर पर पहुँच गई है कि रुपये-पैसे की भाषा में कहें तो फैक्ट्री में एक वरकर एक महीने में बीस लाख रुपये के बराबर का उत्पादन करती है। भारत सरकार के तहत क्षेत्र की बात करें तो यहाँ फैक्ट्री मजदूर महीने में पाँच-छह हजार से एक-सवा लाख रुपये तक उठाते हैं। बात लेने की है। कोई कम्पनी देती नहीं। कोई नेता दिलवाता नहीं। कोई मन्त्री-अफसर कानून लागू नहीं करवाता। लेना होता है। मजदूर लेते हैं।

फरीदाबाद में **शाही एक्सपोर्ट** गारमेन्ट्स फैक्ट्रियों में अधिकतर मजदूर महिला हैं और यहाँ वरकर ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से तथा बोनस बीस प्रतिशत लेते हैं, बोनस में ढाई महीने की तनखा लेते हैं। फरीदाबाद में **गुडईयर टायर, एस्कोर्ट्स, व्हर्लपूल, जे सी बी, यामाहा** और गुडगाँव-आई एम टी मानेसर में **मारुति सुजुकी, होण्डा** फैक्ट्रियों में परमानेन्ट मजदूर महीने में पचास हजार से एक लाख रुपये लेते हैं। इन मजदूरों से न्यूनतम वेतन इतना है जैसी बात कोई कम्पनी, कोई मैनेजमेन्ट, कोई सरकार नहीं करती, न ही कर सकती।

एक कहानी

नई फैक्ट्री। ट्रेनी, टेम्परेरी, परमानेन्ट अगल-बगल में काम करते। खड़े-खड़े काम। उत्पादन की गति कम्पनी बढाती रहती। स्टाफ हर समय सिर पर खड़ा रहता। शिफ्ट के बाद युवा वरकरों को बिस्तर दीखता।

मजदूरों में तालमेल हुये, तालमेल बढने लगे। पाँचवें वर्ष में ट्रेनी, टेम्परेरी, परमानेन्ट की तालमेल वाली गतिविधियों ने मैनेजमेन्ट की नाक में दम कर दिया। पुलिस के जरिये दहशत द्वारा वरकरों को नाथने की कोशिश। फेल। कम्पनी और सरकार को ट्रेनी, टेम्परेरी, परमानेन्ट के तालमेलों के सम्मुख पीछे हटना पड़ा।

लीडरों से चर्चायें। फैक्ट्री में लीडरों को मान्यता। परमानेन्ट को रियायतें। फिर ट्रेनी रखना बन्द कर दिया। और फिर उन सब टेम्परेरी को निकाल दिया। कम्पनी ने नये टेम्परेरी भर्ती करने का सिलसिला आरम्भ किया। उत्पादन कार्य को टेम्परेरी पर डालते जाना। हर तीन वर्ष में समझौतों द्वारा परमानेन्ट की तनखा बढाना। टेम्परेरी पर सुपरवाइजरों की एक और लेयर में कई परमानेन्ट परिवर्तित। परमानेन्टों में पंच एण्ड लन्च वाले बदलाव भी।

पुलिस आक्रमण के खिलाफ एक दिन वार्षिक अनुष्ठान। बड़े-छोटे लीडरों को भाषण देने के लिये बन्धुआ श्रोता। भाषणों में परमानेन्टों का लड़ाकू मजदूरों के तौर पर बखान।

भाषण सुनो और फिर एक्स्ट्रा समय काम करो का विरोध टेम्परेरी करते रहे हैं। इधर एक शिफ्ट के टेम्परेरी भाषणों के दौरान फैक्ट्री में सामान्य उत्पादन में रहे। छूटी शिफ्ट के टेम्परेरी हाँकने पर भी बन्धुआ श्रोता नही बन रहे। **टेम्परेरी द्वारा लीडरों के भाषण सुनने से इनकार।**

बहुत कमजोर हैं कम्पनियाँ

✶**एस एण्ड आर** (298 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव) मैटल पॉलिश फैक्ट्री में एक भी मजदूर परमानेन्ट नहीं है। एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये करीब 150 वरकर रखे हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दिवाली पर मजदूरों को बोनस नहीं देते।

✶ **किरण उद्योग** (32 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और स्टाफ की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा बहुत देरी से — जून की 19 जुलाई को दी जबकि मई की 27 जून को जा कर दी थी।

✶**प्रिसीजन टैस्टिंग मशीन** (एस-12 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 8500 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

✶**एन बी के** (306 सैक्टर-24, फरीदाबाद) ऑटो पार्ट्स फैक्ट्री में 100 हैल्परों की तनखा 7500 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। सुबह साढे आठ से रात 8 बजे की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶**ओरियन लैदर** (90 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में नौकरी छोड़ने के बाद फण्ड निकालने का फार्म भरने में बहुत देरी करते हैं। जिन आठ-दस वरकरों के फार्म भर दिये थे उनके फार्म दो-तीन बार पी एफ कार्यालय ने यह कह कर लौटा दिये कि खातों में कम्पनी ने पैसे जमा नहीं किये हैं। तब जा कर कम्पनी ने पैसे जमा करवाये।

✶ **एम एम ऑटो** (192ए सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। करीब 600 वरकर हैं लेकिन फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। तनखा हर महीने देरी से।

✶**रांगी इन्टरनेशनल** (बी-3/4 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में इस 31 मार्च को सब परमानेन्ट वरकरों का हिसाब बना दिया लेकिन पैसे किसी को नहीं दिये हैं। जिन्हें चेक दिये वो बाउन्स हो चुके हैं। करीब 150 मजदूर और 30-35 स्टाफ वाले अब भी फैक्ट्री में काम कर रहे हैं जबकि ई एस आई तथा पी एफ पहली अप्रैल से बन्द कर दिये हैं। मई की तनखा 15 जुलाई को जा कर दी थी और जून की पहली अगस्त तक नहीं दी थी।

✶**मल्टीटेक** (20/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) फैक्ट्री में सुबह साढे आठ से रात 9 बजे की शिफ्ट है और अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। चार-पाँच सौ वरकर हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। मैनेजमेन्ट पानी-पेशाब के स्थान पर ताला लगाने लगी है — सुबह साढे दस, फिर 1 बजे, फिर 3 बजे, फिर 5 बजे, फिर 7 बजे खोलते हैं।

✶ **न्यू स्वान** (100 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में पावर प्रैसों पर हाथ कटते रहते हैं। इधर वर्ष-भर में ही 7 मजदूरों के हाथ कटे हैं। जब किसी पावर प्रैस पर हाथ कटता है तब उस पर सैन्सर लगा देते हैं। इधर 30 पावर प्रैसों में 7-8 पर ही सैन्सर हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 600 वरकर काम करते हैं। इधर काम कम के कारण कुछ विभागों में साढे दस-साढे दस घण्टे की शिफ्ट भी हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 34 रुपये प्रति घण्टा। एक मजदूर भी परमानेन्ट नहीं है। वरकरों के संग सुपरवाइजर भी दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। महँगाई भत्ते के 4 महीने के पैसे नहीं दिये। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। बारह घण्टे की ड्युटी में एक कप चाय भी नहीं देते।

✶**भैंरो इम्ब्राइड्री** (सी-16 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में करीब 300 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई एस आई तथा पी एफ 50-60 के ही हैं। ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर तीस दिन के 12,000 रुपये देते हैं।

✶**नेफा एक्सपोर्ट** (29 सेक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में प्रदुषण बहुत ज्यादा है। अल्युमिनियम ढलाई की और फोरजिंग की भट्टियाँ हैं। फैक्ट्री के अन्दर धुँआ ही धुँआ। मजदूरों के लिये पीने का पानी बहुत गन्दा। महँगाई भत्ते के चार महीने के पैसे नहीं दिये हैं।

✶ **कोसमोस** (131 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 35 रुपये प्रति घण्टा। तनखा देरी से — किसी को 12 को, किसी को 14 को, किसी को 20 तारीख को। छोड़ने पर 10-12 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। पावर प्रैस पर हाथ कटने पर निकाल देते हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं लेकिन छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।

✶**बिन्दू एक्सपोर्ट** (213 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में इस समय महीने में 120-130 घण्टे ओवर टाइम, सीजन में यह 200-250 घण्टे। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मजदूरों को बी-कार्ड और डी-कार्ड दिये हैं। बी-कार्ड वाले 150 वरकरों की ई एस आई तथा पी एफ हैं। डी-कार्ड वाले 1350 मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, तनखा नगद। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। कम्पनी 12-16 घण्टे की ड्युटी में एक कप चाय भी नहीं देती। ✶**परिमल बुखारिया** (ई-47/10 ओखला फेज-2, दिल्ली) सूट फैक्ट्री में दिन में 10 घण्टे और रात को 12 घण्टे की शिफ्ट। 150 वरकरों में 10-12 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। हैल्परों की तनखा 7500-8500 रुपये। ✶**जे डी एम ओवरसीज** (115 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री मे अभी 200 मजदूर हैं और काम आने पर 4-500 हो जाते हैं। दो सौ वरकरों में 50 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। हैल्परों की तनखा 7500 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

साझेदारी

✶आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— **वीरवार, 30 अगस्त को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।**

— **उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास बुधवार, 29 अगस्त को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।**

— **शुक्रवार, 31 अगस्त को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।**

✶ फरीदाबाद में अगस्त में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

नोएडा : मोजर बेयर

2200 मजदूरों की दस महीने की तनखायें बकाया और फैक्ट्री में तालाबन्दी। जानकारी मोजर बायर वरकर ने व्हाट्सएप द्वारा भेजी है।

मोजर बेयर मजदूर आरम्भ में ही लिखता है कि यह बातें अधिकाधिक व्हाट्सएप नम्बरों पर फारवर्ड की जायें ताकि कम्पनी और सरकार पर दबाव बढे।

मोजर बेयर इण्डिया लिमिटेड, प्लॉट 66 उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा फैक्ट्री की 4 नवम्बर 2017 को कम्पनी ने अचानक तालाबन्दी कर दी।

षड्यंत्र पर षड्यंत्र : मोजर बेयर मैनेजमेन्ट ने अलकेमिस्ट रीकंस्ट्रक्शन कम्पनी के साथ सांठगांठ की। बैंक ऑफ हैदराबाद का 180 करोड़ रुपये का लोन अलकेमिस्ट को ट्रान्सफर करवा दिया। फिर मोजर बेयर के खिलाफ अलकेमिस्ट कम्पनी एन सी एल टी कोर्ट गई। मोजर बेयर को दिवालिया घोषित करने का षड्यंत्र।

मोजर बेयर कम्पनी ने 2008 में अनूपपुर, मध्य प्रदेश में मोजर बेयर थर्मल पावर प्रोजेक्ट की नींव रखी। फिर 2011 में नाम बदल कर हिन्दुस्तान पावर प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड़ कर दिया। मजदूरों ने मोजर बेयर इण्डिया लिमिटेड और इसकी सब्सिडियरी कम्पनियों की बैलैंस शीट की जाँच की तो घोटाले दर घोटाले सामने आये। वरकरों ने शासन-प्रशासन के सामने तथ्य रखे। फिर कई बार उत्तर प्रदेश के श्रम मंत्री से मिले। मजदूरों ने मुख्य मंत्री का दरवाजा भी खखटाया।आश्वासन पर आश्वासन, हर जगह से आश्वासन मिलते रहे। कोई राहत नहीं मिली।

तब मजदूरों ने एन सी एल टी कोर्ट में आवेदन दिया। इस अदालत ने 31 जनवरी 2018 को मोजर बेयर फैक्ट्री की तालाबन्दी को खारिज कर दिया।

और तब उत्तर प्रदेश सरकार की नीयत में खोट साफ-साफ सामने आया : 1 फरवरी 2018 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के नाम से जारी आदेश में मोजर बेयर फैक्ट्री की तालाबन्दी 180 दिन के लिये निर्धारित की गई। जबकि, 4 नवम्बर 2017 को की गई तालाबन्दी को 14 नवम्बर को ही जिला उप-श्रमायुक्त ने गैरकानूनी घोषित कर दिया था। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार को अपने अधिकार और आई डी एक्ट की धारा 3 का संज्ञान लेते हुये तालाबन्दी तत्काल खत्म करने के लिये पत्र भेजा था। इस सम्बन्ध में मोजर बेयर मजदूर कई बार श्रम मंत्री और मुख्य मंत्री से मिले लेकिन सरकार ने 14 नवम्बर से 31 जनवरी के बीच कोई निर्णय नहीं लिया।

वरकरों ने कोर्ट से तालाबन्दी तो खारिज करवा ली लेकिन मजदूरों को उनका बकाया वेतन नहीं दिया गया है। और फैक्ट्री की तालाबन्दी जारी है।

मोजर बेयर वरकरों ने व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक, ईमेल के जरिये निजी तथा सामुहिक तौर पर कई स्तरों पर अपनी बातें रखी हैं। वरकरों ने मोजर बेयर मैनेजमेन्ट द्वारा किये दस हजार करोड़ रुपये के घोटाले को भी उजागर किया है।

कुछ इमेल पते

ई एस आई महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय पी एफ आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

नर–नारी सम्बन्ध

● मादा और नर में परस्पर आकर्षण व्यापक है। नर और मादा को यह अत्यन्त आनन्ददायक यौन क्रियाओं तक ले जाता है। किसी भी योनि के बने रहने के लिये प्रजनन की प्रक्रिया स्वभाविक बन जाती है।

● कई योनियों में मादा की यौन क्षमता नर की क्षमता से अधिक होती है। मानव योनि में भी स्त्री की यौन क्षमता पुरुषों से अधिक होती है।

● हमारे पूर्वजों में, हम सात अरब के पूर्वजों में आदमी और औरत के बीच यौन सम्बन्धों की अनेक मान्य प्रथायें रही हैं। प्राचीन ग्रन्थों में पिता और पुत्री, माँ और बेटा, बहन और भाई के बीच यौन सम्बन्ध होने का सहज वर्णन है। एक स्त्री के अनेक पुरुषों से यौन सम्बन्ध होने के सामान्य विवरण हैं। पिता की महत्वहीनता इस रूप में दिखती है कि प्रारम्भिक विवरण में सन्तान को माता के नाम से सम्बोधित किया जाता था।

● मान्य के अमान्य बनने और नये मान्य के उभरने का एक सिलसिला चला है।

● लगता है कि पृथ्वी पर कुछ मानव समूहों में नर और नारी के बीच सम्बन्धों में प्रारम्भिक उल्टफेर का एक महत्वपूर्ण कारण उनमें ''मैं'' का उदय होना और पुरुषों के इस '' मैं'' के वाहक वाहन बनने में है।

● जन्म के बाद मृत्यु निश्चित है। ''मैं'' के लिये यह हादसा बना। ''मैं'' के वाहक पुरुष पगला गये।

● अति आशा और अति निराशा के दो छोरों के बीव पुरुष झूलने लगे। एक तरफ अमर होने के प्रयास और दूसरी तरफ जन्म ही शाप तथा नारी पाप की मूर्ति वाला समर्पण। अतियों के बीच वंश-रूपी विषबेल जन्मी और फैली।

● अपने होने, अपने बने रहने, चिरकाल तक बने रहने के लिये वंश का बने रहना पुरुष के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण बना। जैसे भी हो, पुत्र की प्राप्ति एक अनिवार्यता बनी। और ''जैसे भी हो'' का स्थान ''मेरा ही हो'' पुत्र ने ली। एक औरत की यौन तृप्ति करने में भी अक्षम एक पुरुष ने अनेक स्त्रियों को अपने लिये बन्धक बनाया।

● स्त्री के अनेक पुरुषों से यौन सम्बन्ध के स्वभाविक चलन को रोकने में पुरुष भिड़ गये। पृथ्वी पर हर सभ्य समाज में नारी को नारी नहीं रहने देने के लिये क्या-क्या नहीं किया गया। और इसमें विफलता दर विफलता पर भड़ास : ''त्रिया चरित्र को देवता भी नहीं समझ सकते।''

● वे नर और नारी हम सात अरब के पूर्वज हैं।

● वर्तमान में विगत और भविष्य विद्यमान रहते हैं। इसलिये अपने पूर्वजों की कुछ चर्चा के बाद वर्तमान और भविष्य को थोड़ा देखते हैं।

● पुरुष के संग आज स्त्री भी ''मैं'' की वाहक है। बच्चे भी ''मैं'' के वाहक। ऐसे में पुरुष के ''प्रभुत्व'' और पीड़ा के आधार अधिकाधिक डगमग हैं।

● परिवार-रूपी किला और यातनागृह अस्तित्व के संकट से रूबरू है। नर ही नहीं बल्कि नारी द्वारा भी पीड़ा में सुरक्षा देखना ऐसे सवालों से घिरता जा रहा है जिनके यथास्थिति में कोई उत्तर नहीं हैं।

● विवाह से पहले, विवाह के बाहर औरत और आदमी के बीच सम्बन्ध, यौन सम्बन्ध नित चौड़ी होती वे दरारें हैं जो यथास्थिति के एक स्तम्भ, परिवार के उन्मूलन की तरफ अग्रसर हैं।

● प्रत्येक मनुष्य ''मैं'' का वाहक। प्रत्येक मनुष्य का प्रत्येक मनुष्य के संग अधिकाधिक घनिष्ठता से जुड़ते जाना। यह एकमेव और एकमय का दौर है, unique and together का समय है।

● हम नारी के नारी बनने और पुरुष के पुरुष बनने की पूर्ववेला में हैं। इधर यौन सम्बन्धों के आनन्ददायक होने की बजाय हवस-रूप धारण कर अत्यन्त पीड़ादायक बनने की काफी चर्चा होती है। जबकि, आदमी का आदमी बनना और औरत का औरत बनना एक प्रवेश-द्वार भी है। हम आनन्ददायक, उल्लासपूर्ण स्त्री और पुरुष के बीच बहुआयमी सम्बन्धों के मुहाने हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।